सपनों का घर : सही योजना और समझदारी से बने खूबसूरत आशियाने की पहचान

घर केवल ईंट, सीमेंट और दीवारों का ढांचा नहीं होता, बल्कि यह परिवार के सपनों, भावनाओं और जीवनशैली का प्रतिबिंब होता है. इसलिए किसी भी घर के निर्माण या इंटीरियर की शुरुआत करने से पहले परिवार की आवश्यकताओं, उपलब्ध स्थान और प्राकृतिक रोशनी को समझना सबसे महत्वपूर्ण कदम है. यदि योजना सही हो, तो सीमित जगह और बजट में भी घर को सुंदर, आरामदायक और उपयोगी बनाया जा सकता है.

यह बात इंटीरियर डिजाइनर वर्षा प्रभु ने नवभारत से बातचीत के दौरान कही. वर्षा प्रभु का मानना है कि घर की सुंदरता केवल महंगे सामान से नहीं, बल्कि बेहतर स्पेस प्लानिंग से आती है. प्रत्येक कमरे का उपयोग उसकी आवश्यकता के अनुसार किया जाए, फर्नीचर इस प्रकार रखा जाए कि आने-जाने में सुविधा रहे और हर कोना उपयोगी बन सके. इससे घर व्यवस्थित होने के साथ-साथ अधिक खुला और आकर्षक दिखाई देता है.

रंगों का चयन भी घर के वातावरण पर गहरा प्रभाव डालता है. हल्के और संतुलित रंग कमरों को बड़ा और शांत महसूस कराते हैं, जबकि सही संयोजन घर में सकारात्मक ऊर्जा और सुकून का अहसास पैदा करता है. इसके साथ ही ऐसा फर्नीचर चुनना चाहिए जो केवल देखने में सुंदर न हो, बल्कि रोजमर्रा की जरूरतों को भी पूरा करें. वे यह भी सलाह देती हैं कि घर के निर्माण या इंटीरियर की शुरुआत से पहले किसी अनुभवी इंटीरियर विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य लेना चाहिए. विशेषज्ञ की सलाह से समय, धन और संसाधनों की बचत होती है, गलतियों की संभावना कम होती है और परिणाम अधिक संतोषजनक मिलते हैं. आज के समय में एक सुंदर घर वही है, जो केवल देखने में आकर्षक न हो, बल्कि परिवार की आवश्यकताओं के अनुरूप आरामदायक, व्यवस्थित और लंबे समय तक उपयोगी भी साबित हो. सही योजना, सोच-समझकर लिया गया निर्णय और विशेषज्ञों का मार्गदर्शन किसी भी साधारण मकान को एक आदर्श घर में बदल सकता है.

वर्षा प्रभु
इंटीरियर डिजाइनर

आवश्यकताओं को बजट को प्राथमिकता दें

इंटीरियर विशेषज्ञ वर्षा प्रभु का कहना है कि घर बनाते समय इंटरनेट पर दिखने वाली तस्वीरों की नकल करने के बजाय अपनी आवश्यकताओं, जीवनशैली और बजट को प्राथमिकता देनी चाहिए. हर परिवार की जरूरतें अलग होती हैं, इसलिए वही डिज़ाइन सबसे बेहतर होता है जो उनके दैनिक जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाए.

कुछ बदलाव किए जाएं तो इंदौर सदैव अलग पहचान बनाए रखेगा

संध्या राय चौधरी
संस्थापक, रचनाकार त्रिवेणी समूह

नवभारत
कैसा हो सपनों का इंदौर

वैसे तो हमारा इंदौर शहर अत्यंत खूबसूरत, संस्कारित एवं संवेदनशील है, लेकिन कुछ बदलाव कर दिए जाएं तो निश्चित ही इंदौर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सदैव अलग पहचान बनाए रखेगा.

सुधारों की फ़ेहरिस्त में हम बात करें तो सबसे पहले निश्चित ही यहाँ के बिगड़े ट्रैफ़िक से यहाँ के रहवासी ही नहीं बाहर से आने वाले मेहमान भी बहुत परेशान हो जाते हैं. विदेशों की तरह यदि यहाँ भी प्रशासनिक स्तर पर कड़े नियम, बड़ा जुर्माना एवं सख्ती की जाए तो यह समस्या दूर हो सकती है. वहीं, दूसरे क्रम में शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव होना चाहिए. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय यूनिवर्सिटीज की रैंकिंग में काफी पीछे है. डिग्री लेने के लिए ऐसे मानक बनाए जाएं कि सिर्फ आस-पास के छोटे शहरों या गाँवों के स्टूडेंट्स ही यहां पढ़ने न आएँ, बल्कि बड़े एवं मेट्रोपॉलिटन शहरों से भी स्टूडेंट्स यहां पढ़ने में रुचि लें. इसके अलावा शहर की सड़कों की हालत बदहाल है. स्वच्छता का नारा भी गायब हो चुका है. इंदौर वासियों को इन मूलभूत सुविधाओं के नाम पर सिर्फ असुविधाओं का सामना करना पड़ता है, एक अच्छा शहर वही दिल में बसा रह सकता है जब आमजन की तकलीफें कम हों.

शहर में साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आयोजन हर दिन होते हैं जिनमें बड़ी संख्या में लोगों की मौजूदगी होती है. किंतु दुर्भाग्य है कि एक भी स्थान ऐसा नहीं है जहां इन आयोजनों के लिए नि:शुल्क या न्यूनतम राशि में जगह उपलब्ध हो जाए, कम से कम महिलाओं की ग़ैर अनुदान प्राप्त संस्थाओं के कार्यक्रमों के लिए सरकार को स्थान उपलब्ध करवाना चाहिए.

संवाद सबसे ज़रूरी है। महीने में एक बार अलग-अलग दिन कमिश्नर, कलेक्टर, महापौर , आई जी जैसे बड़े अधिकारी जनसुनवाई के अलावा खुले स्थान पर आम नागरिकों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे तो लोगों का विश्वास सरकारी मशीनरी पर बढ़ेगा.

फ्रेंडशिप डे पर गूंजे किशोर कुमार के सदाबहार नगमे

वीणा म्यूजिकल ग्रुप एवं स्टार फैन क्लब के संयुक्त तत्वावधान में फ्रेंडशिप डे और महान पार्श्वगायक किशोर कुमार के जन्मदिवस के अवसर पर सलामत रहे दोस्ताना हमारा शीर्षक से संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन संतोष सभागृह में किया गया. कार्यक्रम में लाइव बैंड के साथ किशोर कुमार, मोहम्मद रफी और मुकेश के सदाबहार गीतों की शानदार प्रस्तुतियों ने श्रोताओं का मन मोह लिया.

कार्यक्रम में गायक राजेश शर्मा, नासिर खान, प्रकाश गुप्ता, जयमाला लाड एवं सपना जोशी ने एक से बढ़कर एक गीत प्रस्तुत किए. राजेश शर्मा और नासिर खान ने बने चाहे दुश्मन जमाना हमारा, राजेश शर्मा ने वो शाम कुछ अजीब थी और डाकिया डाक लाया, राजेश शर्मा एवं जयमाला लाड ने ये

मौसम आया है तथा प्यार का दर्द है मीठा-मीठा प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरीं. प्रकाश गुप्ता ने तौबा ये मतवाली चाल और मैं तो हर मोड़ पर तुझको, प्रकाश गुप्ता एवं सपना जोशी ने किसी राह में किसी मोड़ पर, नासिर खान ने काली घटा छाए और जिंदगी तो बेवफा है, जबकि नासिर खान एवं जयमाला लाड ने वो जब याद आए, तथा जयमाला लाड एवं प्रकाश गुप्ता ने धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले प्रस्तुत कर समां बांध दिया.

कार्यक्रम में मेलोडियस संगीत इंटरनेशनल रिदम के राजेश मिश्रा ने संगीत संयोजन किया, जबकि मंच संचालन कैफियत के सतीश पांडे ने किया. मुख्य अतिथियों में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी प्रदीप शर्मा, एडिशनल आरटीओ राजेश गुप्ता, राम दयाल फरक्या, जगदीश धनोतिया, शैलेश गर्ग, ठाकुर मनोहर सिंह चौहान, ओमप्रकाश गर्ग एवं प्रकाश एरन उपस्थित रहे. कार्यक्रम के आयोजक प्रकाश गुप्ता एवं संयोजक हेमंत अग्रवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया.

'गेम बोनांजा' ने बचपन की सुनहरी यादों से रूबरू कराया

दोस्ती के रंग, बचपन के संग : फ्रेंडशिप डे पर गूंजा 'गेम बोनांजा'

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में दोस्ती निभाने और अपनों के साथ कुछ बेफिक्र पल बिताने का समय निकालना आसान नहीं है. मोबाइल और सोशल मीडिया के दौर में आमने-सामने बैठकर हंसना, खेलना और यादें बनाना जैसे कहीं पीछे छूटता जा रहा है. ऐसे समय में फ्रेंडशिप डे के अवसर पर आयोजित 'गेम बोनांजा' ने लोगों को एक बार फिर बचपन की उन सुनहरी यादों से रूबरू कराया, जब खुशी का मतलब सिर्फ साथ खेलना और दिल खोलकर हंसना होता था।

फ्रेंडशिप डे के खास मौके पर 'उड़ते कबूतर' संस्था द्वारा एक कैफे में 'गेम बोनांजा' का आयोजन किया गया. इस अनूठे कार्यक्रम में व्यवसाय, चिकित्सा, वकालत, आर्किटेक्चर सहित विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लगभग 30 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया. पूरे आयोजन में दोस्ती, अपनापन और टीम भावना का सुंदर संगम देखने को मिला. कार्यक्रम का उद्देश्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं था, बल्कि प्रतिभागियों के बीच आपसी सहयोग, विश्वास और टीम बिल्डिंग की भावना को मजबूत करना भी था. अलग-अलग रोचक और मनोरंजक खेलों के माध्यम से सभी ने खुलकर भागीदारी की। विजेता प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जिससे कार्यक्रम का उत्साह और बढ़ गया. संस्था के संस्थापक शशांक गर्ग और ऋतिक साहू ने बताया कि इस पहल की सोच युवाओं को उनके बचपन की यादों से फिर से जोड़ने की है। उनका मानना है कि पेशेवर जीवन और व्यस्त दिनचर्या के बीच लोग वास्तविक दुनिया में रिश्तों को समय देना भूलते जा रहे हैं. ऐसे आयोजन न केवल तनाव कम करते हैं, बल्कि लोगों को नए और पुराने दोस्तों से जुड़ने, संवाद बढ़ाने और जीवन के छोटे-छोटे पलों का आनंद लेने का अवसर भी प्रदान करते हैं.

'गेम बोनांजा' ने यह संदेश दिया कि दोस्ती सिर्फ एक रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन को खुशहाल बनाने वाली ऊर्जा है. यदि व्यस्त जिंदगी से थोड़ा समय निकालकर अपने दोस्तों के साथ हंसी-खुशी के पल बिताए जाएं, तो वही पल जीवन की सबसे खूबसूरत यादें बन जाते हैं.

खूब सजी 'मौसिकी' की महफिल, गज़लों और गीतों ने बांधा समां

प्रीतमलाल दुआ सभागृह में शक्ति पुंज एवं स्वर अमृत संगीत अकादमी परिवार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'मौसिकी की महफिल' में सुरों की मनमोहक प्रस्तुति ने श्रोताओं का दिल जीत लिया. कार्यक्रम में कुल 23 नगमे प्रस्तुत किए गए, जिनमें फिल्मी एवं गैर-फिल्मी ग़ज़लों का विशेष समावेश रहा.

कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित प्रकाश शुजालपुरकर ने प्रसिद्ध ग़ज़ल 'रंग और नूर की बारात किसे पेश करूँ' से किया. इसके बाद उन्होंने गुलाम अली की 'ये कौन आ गई दिलरुबा', मेहदी हसन की 'शोला था जल बुझा हूँ', जगजीत सिंह की 'कोई फ़रियाद तेरे दिल में दबी हो जैसे' तथा 'मुझसे करता था न मिलने के बहाने कितने' जैसी लोकप्रिय ग़ज़लों की प्रभावशाली प्रस्तुति देकर खूब वाहवाही बटोरी. सौम्या मिश्रा ने फिल्म उमराव जान की 'दिल चीज़ क्या है', 'इन आँखों की मस्ती', 'ये क्या जगह है दोस्तों' तथा फिल्म पाकीज़ा की 'चलते-चलते' जैसी सदाबहार ग़ज़लों को स्वर देकर श्रोताओं की भरपूर सराहना प्राप्त की. इन दिनों वे संगीत प्रेमियों की विशेष पसंद बनी हुई हैं. पूजा बैसाखिया ने 'किसी रंजिश को हवा दो कि मैं ज़िंदा हूँ अभी' तथा 'नियत-ए-शौक भर न जाए कहीं' जैसी कठिन ग़ज़लों को सहजता और सधे अंदाज़ में प्रस्तुत कर अपनी संगीत साधना का परिचय दिया. देवयानी पांडे और गीतांश दशोरे ने 'आँखों में हमने आपके सपने सजाए हैं' गीत की शानदार युगल प्रस्तुति दी। देवयानी ने 'रस्म-ए-उल्फत को निभाएं', जबकि गीतांश दशोरे ने हरिहरन की लोकप्रिय ग़ज़ल 'काश ऐसा कोई मंजर होता' प्रस्तुत कर महफिल में रंग भर दिए. कार्यक्रम में फिल्म वीर-ज़ारा के लोकप्रिय युगल गीत 'तेरे लिए हम हैं जिए' और 'दो पल रुका' को पंडित प्रकाश शुजालपुरकर एवं सौम्या मिश्रा ने भावपूर्ण अंदाज़ में प्रस्तुत किया, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा.

पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

रघुवंशी समाज ने लिया हरियाली का संकल्प

इंदौर में पर्यावरण संरक्षण को जनआंदोलन बनाने की दिशा में अखिल भारतीय अखंड रघुवंशी क्षत्रिय परिषद- युवा इकाई ने एक प्रेरणादायी पहल की है.

रघुवर छाया अभियान के तहत निरंकारी गार्डन में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहां समाज के पदाधिकारियों, वरिष्ठजनों, मातृशक्ति और युवाओं ने पौधे लगाकर हरित भविष्य का संकल्प लिया. अखिल भारतीय अखंड रघुवंशी क्षत्रिय परिषद युवा इकाई, इंदौर द्वारा रघुवर छाया अभियान के अंतर्गत निरंकारी गार्डन में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पार्षद बालमुकुंद सोनी की गरिमामयी उपस्थिति रही. इस दौरान समाज के वरिष्ठजन, मातृशक्ति एवं युवा कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया. सभी ने अधिक से अधिक वृक्ष लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का संकल्प भी लिया. कार्यक्रम में करुणा रघुवंशी, पिंकी रघुवंशी, प्रमोद रघुवंशी, अभिषेक रघुवंशी, ओमप्रकाश रघुवंशी, आजाद सिंह रघुवंशी, शंभू सिंह रघुवंशी सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य नागरिक एवं युवा उपस्थित रहे. कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, हरित और स्वस्थ वातावरण तैयार करना रहा. वक्ताओं ने कहा कि एक पेड़ केवल पौधा नहीं, बल्कि आने वाले कल की सांस है. रणवीर सिंह रघुवंशी, जिला अध्यक्ष, इंदौर ने बताया कि रघुवर छाया अभियान केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है. हमारा लक्ष्य हर लगाए गए पौधे को वृक्ष बनाना और समाज में पर्यावरण संरक्षण की स्थायी चेतना विकसित करना है.

एक नजर में ▶ **डेवलपमेंट फाउंडेशन द्वारा जाल सभागृह में युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य : कारण एवं उपचार विषयक विचार गोष्ठी आयोजित**

युवाओं की भावनाओं को समझना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी

इन्दौर. युवाओं की भावनाओं को समझना और उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना समाज के प्रत्येक वर्ग की सामूहिक जिम्मेदारी है. माता-पिता, शिक्षक, समाज और शासन सभी को मिलकर युवाओं की अपेक्षाओं, समस्याओं और भावनाओं पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है. समय पर उचित मार्गदर्शन और संवाद के अभाव में अनेक युवा मानसिक तनाव का सामना करते हुए गलत निर्णय ले रहे हैं.

ये विचार डेवलपमेंट फाउंडेशन द्वारा जाल सभागृह में आयोजित युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य: कारण एवं उपचार विषयक विचार गोष्ठी में विभिन्न विशेषज्ञों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने व्यक्त किए. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की पूर्व कुलपति डॉ. निशा दुबे ने कहा कि छोटे परिवार, माता-पिता दोनों के नौकरीपेशा होने तथा बच्चों को पर्याप्त समय नहीं मिल पाने के कारण युवा स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं. इसका परिणाम समाज में बढ़ती आक्रामकता और मानसिक असंतुलन के रूप में सामने आ रहा है. उन्होंने कहा कि अकेलेपन के कारण अनेक युवा अपनी भावनाएं किसी से साझा नहीं कर पाते, जिससे वे दिग्भ्रमित हो रहे हैं.

गोष्ठी में सुश्री मनस्वी मोहंती, कंचन तारे, रामेश्वर गुप्ता, डॉ. मुकेश चौहान, श्याम सुंदर यादव, डॉ. एस.एल. गर्ग, डॉ. ओ.पी. जोशी, दिलीप वाघेला, रंजना नाईक, नेहा जैन, प्रो. असद खान एवं प्रणिता दीक्षित सहित अनेक वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे. कार्यक्रम में डॉ. रमा चौहान, रेहाना खान, नजमा खान एवं सौम्या पंडित सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे.

गंभीर चिंतन और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता

सेवानिवृत्त कलेक्टर सी.बी. सिंह ने कहा कि तनावग्रस्त युवा समस्याओं का समाधान खोजने के बजाय जीवन से हार मानने जैसे गंभीर कदमों को आसान समझने लगे हैं. उन्होंने इस विषय पर समाज के सभी वर्गों से गंभीर चिंतन और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता बताई. वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. रामगुलाम राजदान ने कहा कि शहर के प्रबुद्ध नागरिकों को युवाओं के हित में आगे आकर सकारात्मक वातावरण तैयार करना चाहिए. उन्होंने नशीले पदार्थों के बढ़ते प्रचलन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो युवा पीढ़ी में भटकाव और बढ़ सकता है. अक्सर अभिभावकों को समस्या की जानकारी तब मिलती है, जब स्थिति काफी गंभीर हो चुकी होती है.